आरण्यक ग्रन्थ :-

संहिताएँ, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् वैदिक साहित्य के मुख्य अंग हैं। ये सब परस्पर सम्बन्धित हैं अन्योन्याश्रित हैं, और एक दूसरे के पूरक हैं। इस दृष्टि से ब्राह्मण ग्रन्थों के बाद आरण्यक ग्रन्थों का स्थान आता है। ये आरण्यक ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों के बीच की कड़ी है। कर्मकाण्ड की दृष्टि से ब्राह्मण ग्रन्थ एवं आरण्यक ग्रन्थ परस्पर सम्बन्धित हैं। ये ब्राह्मण ग्रन्थों के अन्तिमरूप हैं तो उपनिषदों के पूर्वरूप। यही कारण है कि कुछ आरण्यक ग्रन्थ या तो ब्राह्मण ग्रन्थों से संयुक्त हैं या फिर उपनिषदों से। ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञ की प्रायः कर्मकाण्डपरक व्याख्या की गई है लेकिन आरण्यक ग्रन्थों में यज्ञ की आध्यात्मिक व्याख्या की गई है। इसप्रकार ये ग्रन्थ कर्म मार्ग और ज्ञान मार्ग का समन्वय करते हैं।

आरण्यक ग्रन्थों को आरण्यक इसीलिए कहा जाता है क्योंकि इनका पठन-पाठन नगरों तथा ग्रामों में न होकर अरण्यों में होता था। सायणाचार्य ने इन ग्रन्थों के नामकरण के सम्बन्ध में स्पष्ट

किया है कि अरण्यों अर्थात वनों में पढ़ाए जाने के कारण इनका नाम आरण्यक पड़ा 'अरण्य एव पाठ्यत्वादारण्यकमितीर्यते' (ऐतरेय आरण्यक) सुप्रसिद्ध विद्वान एस० बी० आप्टे ने अपने सुप्रसिद्ध 'संस्कृत अंग्रेजी कोष' में आरण्यक शब्द की व्याकरण सम्मत व्याख्या करके यह स्पष्ट किया है कि आरण्यक ग्रन्थ एक प्रकार से धार्मिक एवं दार्शनिक लेख है जो ब्राह्मण ग्रन्थों से सम्बन्धित है और जिनका निर्माण या तो अरण्यों में हुआ या जो वनों में पढ़ाए जाने के लिए रचे गए 'अरण्येऽनूच्यमानत्वात आरण्यकम्' एवं 'अरण्येऽध्ययनादेव आरण्यकमुदाहृतम्'। ब्राह्मण और उपनिषदों की भाँति आरण्यक ग्रन्थों की संख्या भी बहुत थी परन्तु इस समय केवल आठ ही आरण्यक ग्रन्थ उपलब्ध है। ऐतरेय और सांख्यायनारण्यक ऋग्वेद के हैं, जैमिनीयोपनिषद आरण्यक एवं छान्दोग्यारण्यक सामवेद के आरण्यक ग्रन्थ हैं। बृहदारण्यक, काण्व बृहदारण्यक और माध्यन्दिन बृहदारण्यक शुक्ल यजुर्वेद के एवं तैत्तिरीयारण्यक कृष्ण यजुर्वेद का आरण्यक ग्रन्थ है। अथर्ववेद का कोई भी आरण्यक ग्रन्थ नहीं है।

आरण्यक ग्रन्थों में वह ज्ञान था जिसे अदीक्षितों के लिए हानिप्रद तथा अप्रदेय समझा जाता था। इनका अध्ययन अरण्यवासी महर्षियों के द्वारा किया जाता था। जिस प्रकार ब्राह्मणग्रन्थों

में गृहस्थाश्रम के यज्ञ विधानों और दूसरे कुछ कर्मों का वर्णन है, उसी प्रकार आरण्यक ग्रन्थों में वानप्रस्थ आश्रम के जितने भी यज्ञ, महाव्रत तथा होत्रादि कर्म हैं, उनकी विधियाँ और व्याख्याएँ दी गई हैं। वानप्रस्थियों के कर्मकाण्ड सम्बन्धी ग्रन्थ होने के कारण उनमें यज्ञ की आध्यात्मिक व्याख्या का प्रतिपादन भी बड़े युक्तिपूर्ण ढंग से किया गया है। इनमें यज्ञों के रहस्य का विवेचन किया गया है तथा पुरोहितों के कार्यों पर भी प्रकाश डाला गया है। शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन एवं काण्व शाखाओं के आरण्यकों में आत्मतत्त्व के ज्ञान का उपदेश बड़े सरल और सहज ढंग से दिया गया है। कभी-कभी तो आरण्यक और उपनिषदों में इतनी समानता हो जाती है कि उन्हें पृथक् करना कठिन हो जाता है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि उपनिषद् ग्रन्थों में जिस विस्तृत ~~ब्रह्म~~ ब्रह्मज्ञान तथा अद्वैतवाद का प्रतिपादन है, उसका मूलाधार ये आरण्यक ग्रन्थ ही हैं। अतः वैदिक साहित्य में इनका बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा।